अनिल कुमार सिंह द्वारा निर्मित फायदेमंद शौचालय

भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि को कम करने व कम खर्च में तैयार होने वाला शौचालय जो मेहतरों द्वारा पैखाना फेके जाने की बुरी प्रथा पर रोक लगाता है का ही स्वीकृत नाम फायदेमंद शौचालय है। इस शौचालय का मूल सिद्धान्त तो यह है कि पैखाना, पेषाव व जल को पृथक–पृथक एकत्रीकरण कर उसका समुचित प्रबंधन हो। मेघ पाईन अभियान में इस शौचालय की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसे अपने कार्य क्षेत्र में प्रचारित करने का लक्ष्य निर्धारित किया।

बिहार के सुपौल जिला के सुपौल प्रखंड अर्न्तगत पांच पंचायतों में दस फायदेमंद शौचालय बनाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक पंचायत में दो–दो फायदेमंद शौचालय बनाने थे। इस संदर्भ में लाभुकों का चयन करना था। स्वच्छता एवं कृषि गोष्ठी का आयोजन वृहत पैमाने पर किया गया। ग्रामीणों ने लाभुकों का नाम चयनित किया। चयनित लाभुक दम्पत्ति की संस्था स्तर पर बैठक हुई, जिसमें लाभुकों को अनेक दृष्टि से परखा गया। इसके चयन को अन्तिम रुप प्रदान करने में ग्राम्यषील सचिव चन्द्रषेखर की भूमिका अहम रही।

मेघ पाईन अभियान के पांच पंचायतों में से एक पंचायत पिपराखुर्द है, जहां फायदेमंद शौचालय के एक लाभुक के रुप में अनिल कुमार सिंह का चयन हुआ। इनका घर पिपराखुर्द पंचायत के छपकाही मौजा के छपकाही टोला में पड़ता है। अनिल सिंह वेहद मिहनती किस्म के इंसान है, लेकिन, गन्दगी अर्थात गरीबी का परिचय उनके साथ खड़ा नहीं उतरा, उनका घर–आंगन, आस–पड़ोस साफ सुथरा है। दरबाजा फूलों और फलदार वृक्षों से सजा है। यद्यपि वे अपने घर से 08 कि0 मी0 पर अवस्थित सुपौल बाजार में बोरा ढोकर अपनी जीविका चलाते हैं, फिर भी अपने किये वादे से कभी पीछे नहीं हटते।

फायदेमंद शौचालय हेतु संस्था व ग्रामीण स्तर पर अनेक बैठकें व गोष्ठियाँ हुई। इसके बिभिन्न मॉडल पर बिचार किया गया, दो मॉडल संस्था में विकसित भी कर लिये गये। एक मॉडल तो संस्था के प्रयोग में बहुत पहले से आ चुका है। जबकि दूसरे मॉडल को ग्रमीणों के बीच प्रचारित किया गया है।

चूँकि मेघ पाईन अभियान आपसी सहयोग सह अस्तित्व में विष्वास रखता है। अतः शौचालय निर्माण के क्रम में ऐसी व्यवस्था संस्था और लाभुकों के बीच थी कि पैखाना, पेषाब त्याग करने व शौच के लिये उपयुक्त सीट तथा मानव मल को संग्रहित करने हेतु टैंक के लिये आवष्यक स्तंभ आदि संस्था द्वारा उपलब्ध हो। इसके आलावा अन्य सामग्री की व्यवस्था/व्यय लाभुक करेगा। अनिल सिंह जैसे व्यक्ति के लिये इस खर्च का वहन इतना आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने स्वच्छता का महत्व समझ कर इस कार्य को करने का निर्णय लिया। इस निर्णय को कार्यरुप देने में उनकी पत्नी रानी देवी का सराहनीय सहयोग रहा। आज फायदेमंद शौचालय के उद्देष्य को साकार करने वाला यह परिवार दूसरों के लिये प्रेरणा स्त्रोत है। शौचालय में कुछ समस्याएं तो आ रही है जैसे– टैंक से मानव मल के आंषिक जल का रिसाव, गंध, कीट का जन्म आदि। इन समस्याओं के निदान हेतु भी प्रयास किये जा रहे हैं। इन समस्याओं के बावजूद रानी देवी बताती हैं कि ‘‘यह शौचालय उनकी प्रतिष्ठा, पवित्रता, पर्दा की निषानी है, साथ ही इससे उत्पादित साग, सब्जी से कई लाभ होने वाला है।’’